मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2020 marumegh
ISSN:2456-2904

चना फलीभेदक का समेकित कीट प्रबंधन

ऊषा[1], राधेश्याम[2], विजय कुमार मित्रा[3] और माईमॉम सोनिया देवी[4]
[1]सहायक प्राध्यापक, [3,4]शिक्षण सहयोगी, कीट विज्ञान रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय झाँसी
[2]सहायक प्राध्यापक, शस्य विज्ञान, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, साबोर, बिहार
Email: ushamauryaento@yahoo.com, ushamauryaentomology@gmail.com

चना और अरहर का प्रमुख हानिकारक कीट चना फलीभेदक है। इसके द्वारा प्रतिवर्ष औसतन 10–15 प्रतिशत तक चने को और 20–30 प्रतिशत तक अरहर को हानि पहुँचती है। कभी–कभी अनुकूल वातावरण में इसका प्रकोप बढ़ जाने पर पूरी फसल नष्ट हो जाती है। वर्ष 1988–89 में कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और पंजाब में अरहर और कपास की फसल लगभग पूर्णतया क्षतिग्रस्त हो गयी थी। 2003–2004 में सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में इसका भीषण प्रकोप हुआ था। जिसमें अरहर की फसल पूरी तरह नष्ट हो गयी थी।

जीवन चक्र:

चना फलीभेदक के जीवन में चार अवस्थायें होती हैं। अंडे ,सूड़ी, कोषक (प्यूपा) एवं पतंगा (प्रौढ़)। इसके अण्डे गोल, खरबूजे की तरह एक–एक करके पतियों पर बिखरे रहते हैं। अण्डों से 5–7 दिनों में सूड़ी निकलती है। जो कोमल पतियों को खुरच–खुरच कर खाती है। और धीरे–धीरे बडी होती जाती हैं। यह फली में छेदकर अपना मुँह अन्दर घुसा कर सारा दाना खा जाती है। इसलिए इसको ''फलीभेदक'' कहते हैं। 12–14 दिनों बाद यह जमीन के अंदर कोषक में परिवर्तित हो जाती है। जिससे 8–10 दिनों बाद पतंग निकलता है। इसका जीवन चक्र तापमान के अनुसार घटता बढ़ता रहता है। मादा प्रौढ़ 5–6 दिनों में अण्डे देने लगती है। इसकी प्रौढ चना, अरहर, कपास ,टमाटर ,ज्वार की पतियों पर अण्डे देती हैं। इसकी सूड़ी पीले, नारंगी, गुलाबी, हरे और भूरे रंग की होती है। जिसकी पीठ पर धारियाँ होती हैं। ये सूड़ी फसलों को हानी पहुँचाती है।

समेकित कीट प्रबंधन आवश्यक क्यों

इस कीट ने अनेक कीटनाशी रसायनों के प्रति प्रतिरोधकता उत्पन्न कर ली है। जिससे कीटनाशी रसायनों का चना फलीभेदक पर कम और बिल्कुल प्रभाव नहीं पड़ता है। क्योंकि इनके द्वारा ग्रसित फसल पर कीटनाशी रसायनों का प्रयोग करने पर यह कीट दूसरी फसल पर आराम से पलायन कर उसको खाता रहता है। ऐसी स्थिति में इसके प्रबंधन का एक प्रभावशाली उपाय समेकित कीट प्रबधन है। जिससे पर्यावरण प्रदूषण भी नही होता है। और लागत खर्च में कमी होती है ।

समेकित कीट प्रबंधन फसल उत्पादन एवम फसल सुरक्षा का मिला जुला तंत्र है। जिसमें हानिकारक कीटों की सावधानी पूर्वक निगरानी एवं उनके प्राकृतिक शत्रुओं के संरक्षण की प्रक्रियों पर ध्यान दिया जाता है। तथा सभी उपलब्ध कीट नियंत्रक विधियों को समावेशित किया गया है। चयन, वानस्पतिक स्रोतों से प्राप्त कीटनाशक एवं उनके व्यवसायिक उत्पाद, पर्यावरण को कम क्षति पहुँचाने वाली कीटनाशी रसायन इत्यादि।

समेकित कीट प्रबंधन के प्रमुख अवयव :

1. निगरानी : खडी फसल की निगरानी नियमित रूप से करनी चाहिए यदि चने में 1–5 सूड़ी 1 मीटर लम्बी प्रति पंक्ति में मिलने लगे तो तुरन्त आवश्यक फसल सुरक्षा उपाय अपनाने चाहिए सूड़ियों को जांच करने के लिए पौधे के नीचे सफेद कपडा, कागज तथा पॉलीथीन डालकर पौधों को झटक कर झाडें।
2. अगर हो सके तो बडी सूँडियों इकठ्ठा करके नष्ट कर दें ।
3. नीम के बीज की गिरि का 5 प्रतिशत की दर से बुरकाव करें ।
4. यौन रसायन आकर्षण जाल (सेक्स फेरोमोन ट्रेप) 12 ट्रेप प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें (जब नर कीटों की संख्या प्रतिरात्रि प्रतिट्रेप 4–5 तक पहुँचने लगे तो समझना चाहिए अब कीट नियंत्रण जरूरी हो गया है)
5. नीम के तेल का 12.5 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिडकाव करें ।
6. गर्मी के महीनों खेतों की गहरी जुताई करके सूड़ियों और प्यूपा को नष्ट कर दें ।
7. फसल लगाते समय इस चीज का ध्यान अवश्य रखें की पौधों के बीच उचित दूरी रहे ।
8. प्रारंभिक बुवाई (अरली सोईंग), लघु अवधि किस्मों का प्रयोग करें ।
9. एचऐ एनपीवी का 250 लारवारल इक्वेलेंट प्रति एकड़ की दर से छिडकाव करें ।